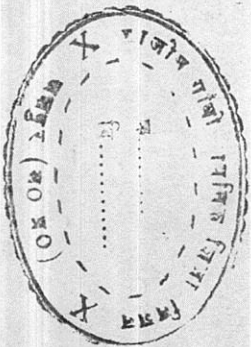
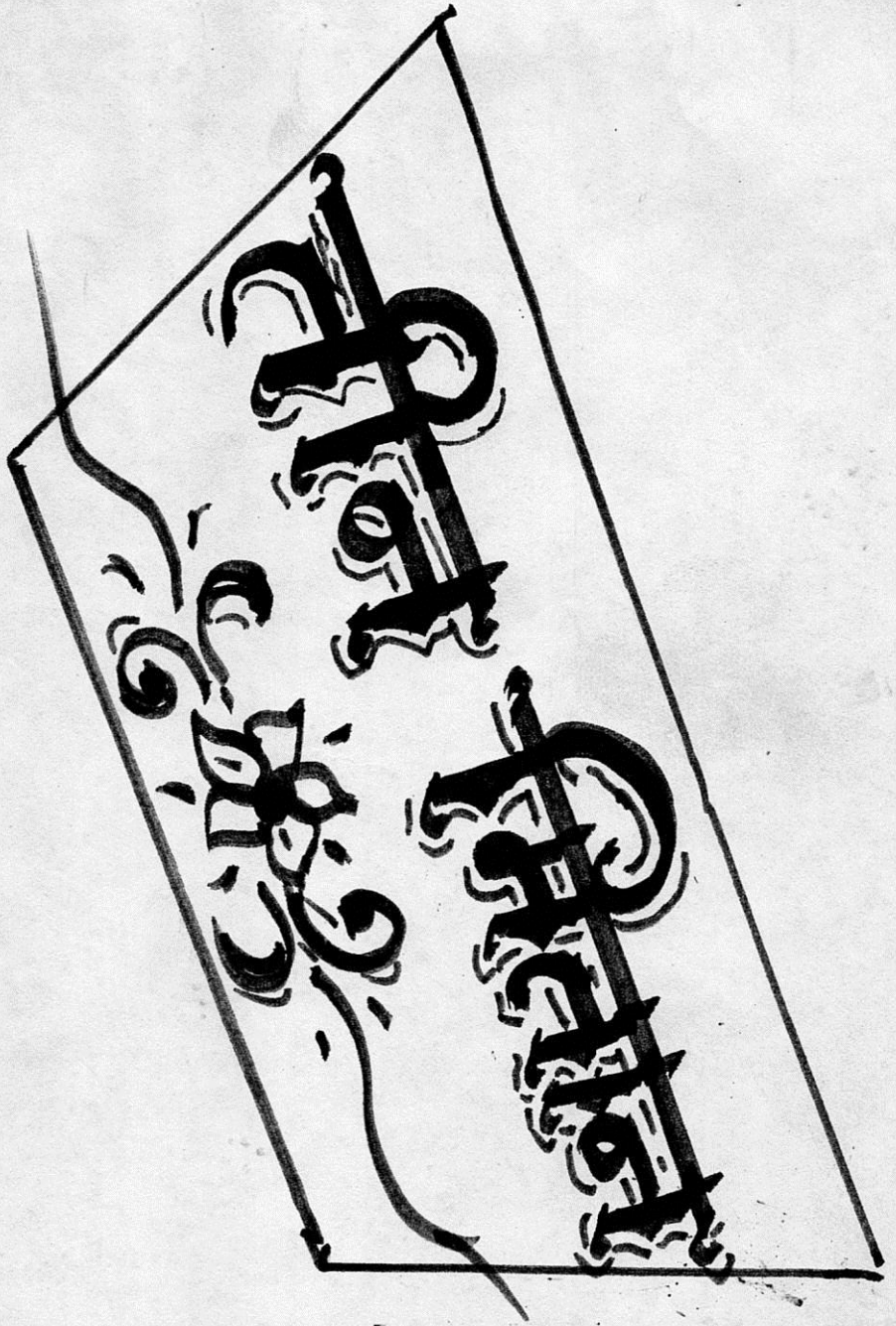
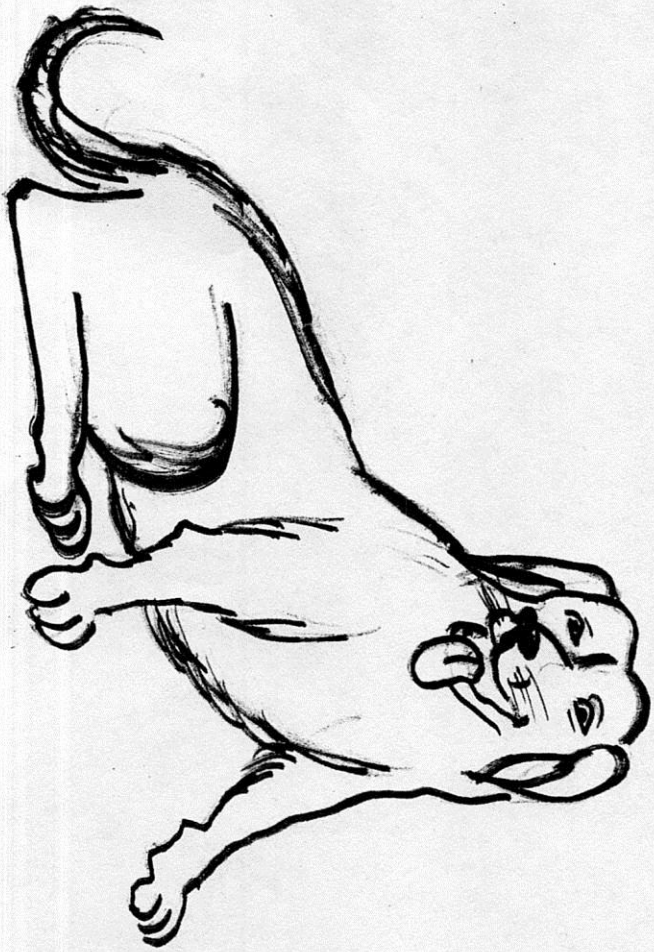


८८



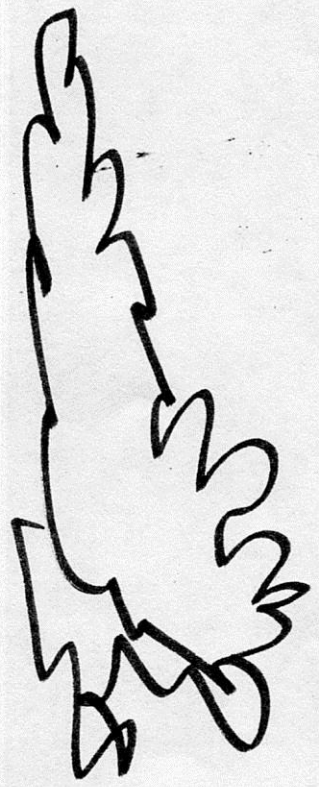
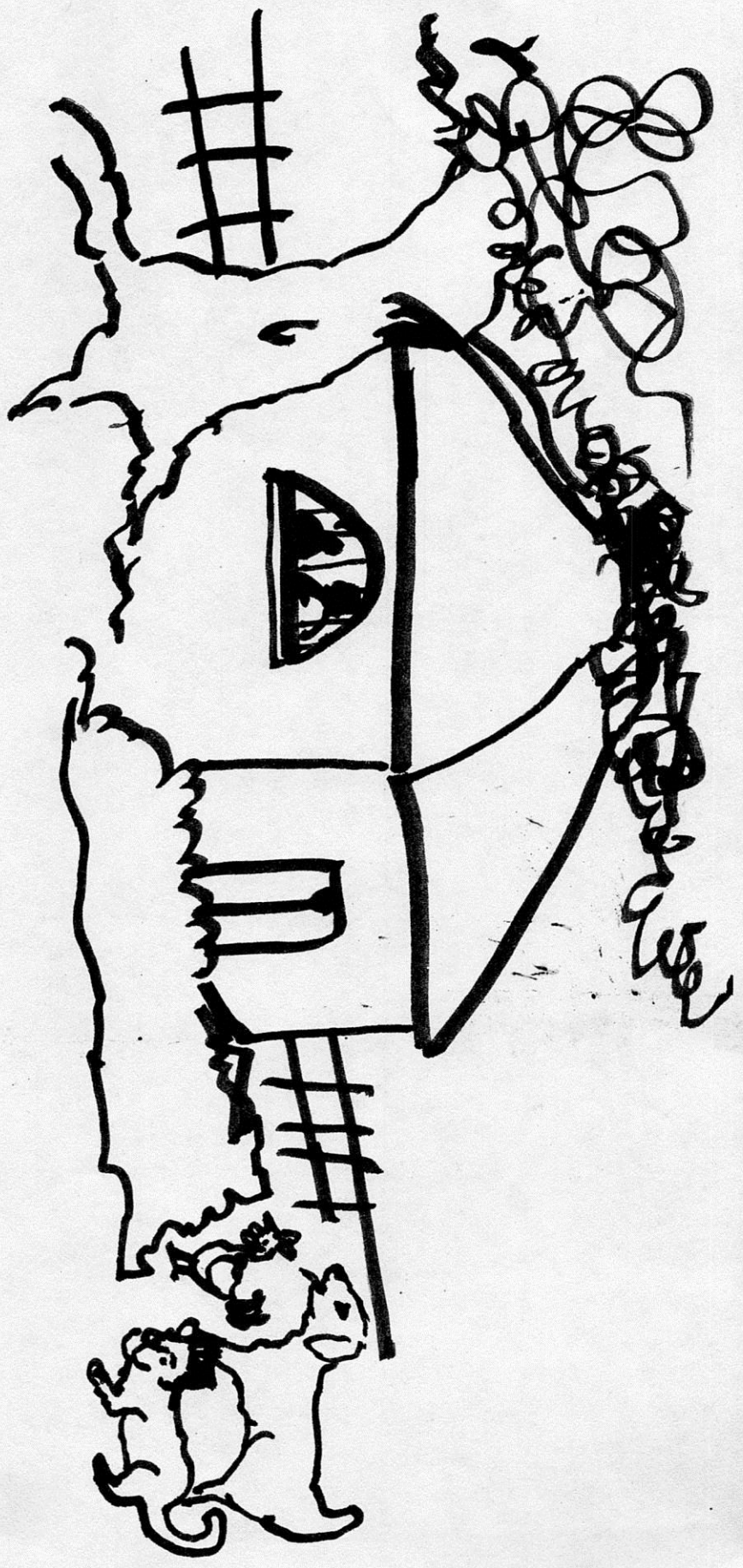
८८

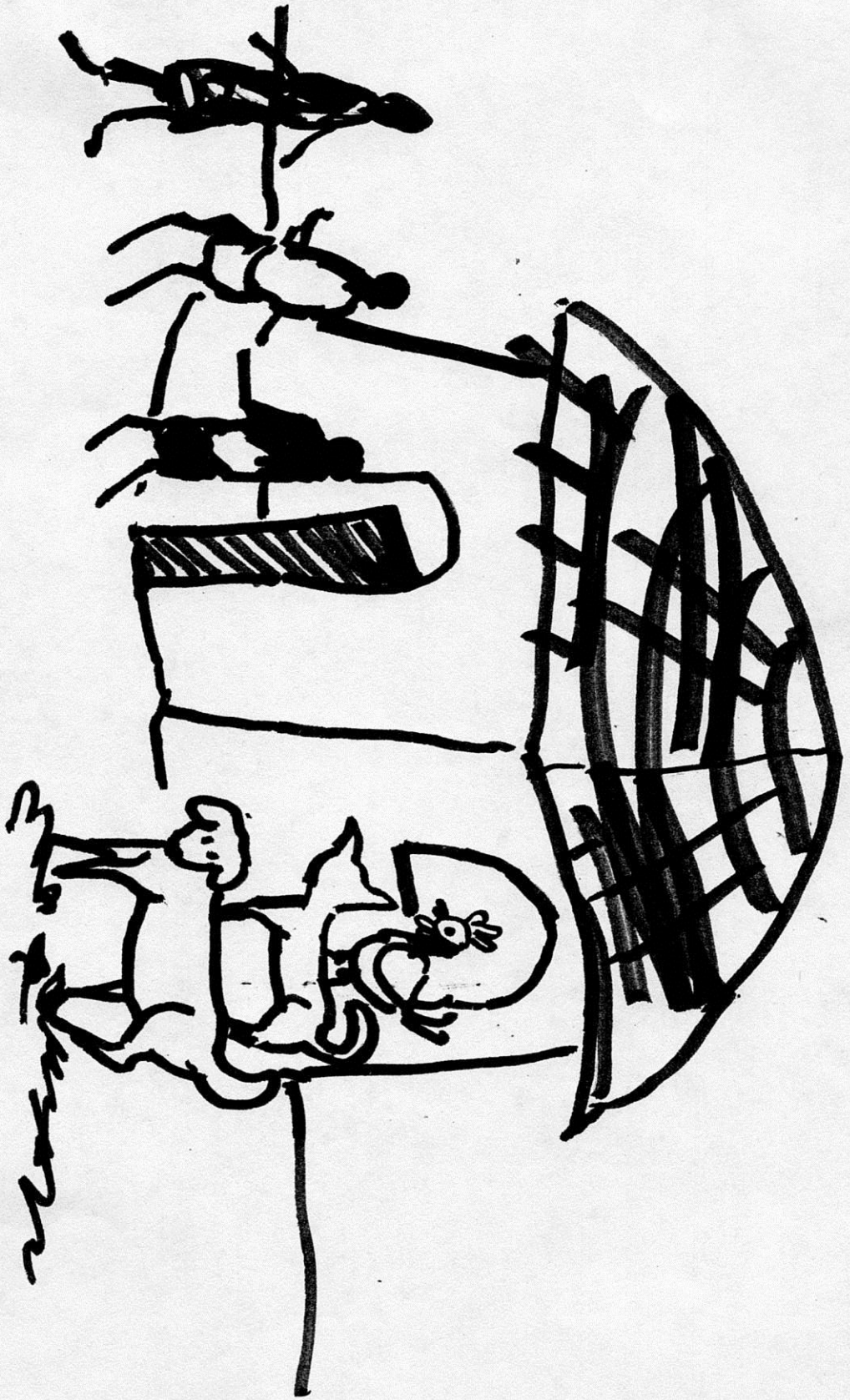


एक कुकुर, बिलड आउर कुरगा बिलाना
जोराई रहेय ।



एक दिन चीनो दुसरोक निकल्यो चीनो के
बाड़ी ओर से बस आयाक. तो वह पहा
बाड़ी कर हरे में आबंय ।





दीर्घां मन उवाच - सोऽपत्यं कुक्कुर उवाच विवर्द्ध, विवर्द्धि
उवाच कुर्गं पारंलक आउर अंबसि से दोहंजाक नो
एगे मन कुर्गंकर पुन्दी के दोपी सोमेका के पुप
एव अइया जेव्य इजे दीर्घां साहिया एग से
कुकल्य आउर दो अइराल साल्य आउर
सुलेक पारंलकल्य /